स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) - प्रथम खण्ड
(द्वितीय पत्र - प्राचीन एवं मध्यकालीन काल)

- डॉ. मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जनता कॉलेज महाविद्यालय
बिरौल

रामचरितमानस, बालकाण्ड - दो. 212, 213

रामचरितमानस एक प्रबंध काव्य है। जिसकी रचना तुलसीदास ने लगभग 1574ई. में की थी। इसमें प्रयुक्त छंद - दोहा और चौपाई एवं भाषा अवधी है। इसमें लगभग 1074 दोहों की संख्या है। यह भक्तिरस से सराबोर काव्य है। इसमें कुल 7 काण्ड हैं - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंका काण्ड एवं उत्तर काण्ड। इस पर 'अध्यात्म रामायण' का प्रभाव है।

तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना 'मानसरोवर' के रूपक की परिकल्पना के रूप में की है। जिसमें 7 काण्ड के रूप में 7 सोपान तथा चार वक्ता के रूप में चार घाट हैं। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

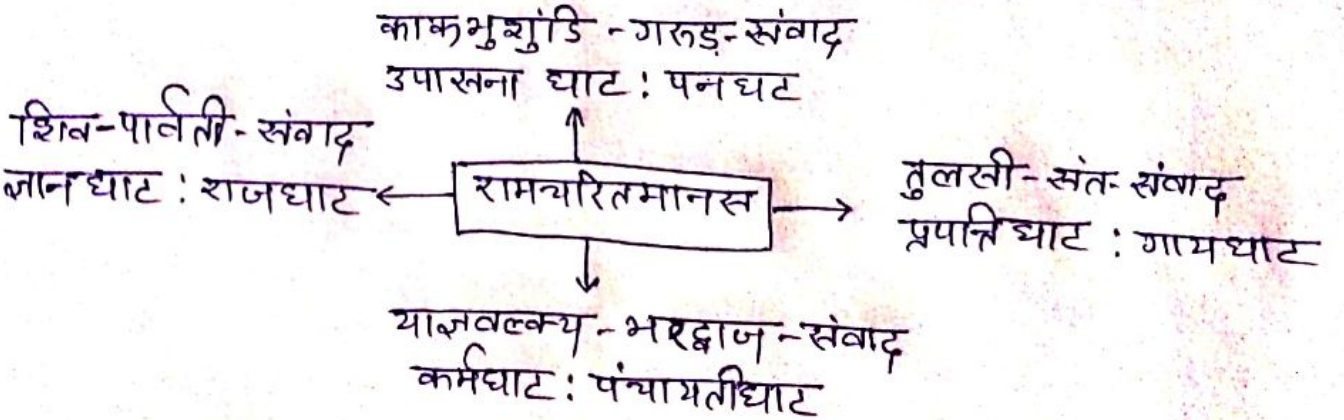

बालकाण्ड - दो. 212

सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥

यह दोहा उस समय की परिस्थितियों का वर्णन करता है जब राम, लक्ष्मण अपने गुरु विश्वामित्र जी के साथ जनकपुर में प्रवेश किए तब यह दृश्य दिखायी दिया। पुष्पवाटिका, बाग और वन, जो बहुत से पक्षियों का निवास स्थल है, ये फूलते फलते और सुन्दर नगर के चारों ओर सुशोभित हैं।

इस दोहा के अन्तर्गत आने वाले चौपाई निम्नलिखित हैं -

Scanned with CamScanner

(1) बनइ न बरनत नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहँईं लोभाई॥
चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी॥

(2) धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठे सकल बस्तु लै नाना॥
चौहट सुंदर गलीं सुहाई। संतत रहहिं सुगंध सिंचाई॥

(3) मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता॥

(4) अति अनूप जहँ जनक निवासू। बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू॥
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी॥

अर्थात् जनकपुर नगर का सौंदर्य बहुत ही अद्भुत है, वर्णन करते नहीं बनता। मन जिधर जाता है उसी तरफ ही आकर्षित हो जाता है। बाजार का सौंदर्य हो या मणियों से बने हुए घरों के छज्जे, ऐसा प्रतित होता है कि स्वयं ब्रह्मा ने अपने हाथों से संवारा है। बाजारों में कुबेर के समान धनी व्यापारी सभी प्रकार की वस्तुएँ लेकर बैठे हैं। चौराहे बहुत ही सुन्दर और गलियाँ सुहावनी, प्राकृतिक सुगन्ध से भरी हुई हैं। सब के घर सुन्दर चित्रों से सजे हुए हैं, जिन्हें मानो कामदेव रूपी चित्रकार ने सभी चित्र बनाया हो। नगर के स्त्री-पुरुष सभी साधु-स्वभाव वाले पवित्र, धर्मात्मा, ज्ञानी और गुणवान हैं।

जहाँ जनक जी का महल है, उस स्थान को देखकर देवता भी थकित हैं, कि ऐसा ऐश्वर्य! राजमहल और परकोटे को देख कर चित थकित हो जाता है। ऐसा लगता है कि समस्त लोकों की शोभा रोक कर अपने में समाहित कर लिया है।

बालकाण्ड दो० 213

"धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति॥

इन पंक्तियों में सीता जी के निवास गृह के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। तुलसीदास कहते हैं-

"चाँदी के समान चमकने वाले धवल महलों में अनेक प्रकार के सुन्दर रीति से बने हुए मणियों से सजे हुए सोने की जरी के परदे लगे हुए हैं। सीता जी के अद्भुत महल की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner